ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 8.4
IJAR 2017; 3(5): 882-886
www.allresearchjournal.com
Received: 18-04-2017
Accepted: 22-05-2017

डॉ. देवी प्रसाद
व्याख्याता, हिन्दी विभाग, एस.एन. के.पी.राजकीय महाविद्यालय, नीमकाथाना, सीकर, राजस्थान, भारत

Corresponding Author;
डॉ. देवी प्रसाद
व्याख्याता, हिन्दी विभाग, एस.एन. के.पी.राजकीय महाविद्यालय, नीमकाथाना, सीकर, राजस्थान, भारत

तेजपाल सिंह 'तेज' के काव्य में जन–जागरण

डॉ. देवी प्रसाद

सारांश
जितना मैंने तेजपाल सिंह 'तेज' को उनके साहित्य–कर्म की निजता के आधार पर जाना–पहचाना है, उसके आधार पर मुझे यह कहने में कोई झिझक नहीं है कि वे एक साहित्यकार के रूप में सामाजिक यथार्थ के चितेरे, जग–जीवन के व्याख्याता और व्यंग्य के साधक तो हैं ही, साथ ही उनके काव्य में मानव–जीवन की अनुपम छवियाँ देखने को मिलती हैं। उन्होंने मानव–जीवन के यथार्थ का चित्रण किया है। उनका काव्य उनके अनुभव से प्रेरित है। वे एक ऐसे स्वस्थ समाज का निर्माण होते देखना चाहते हैं, जिसमें सभी सुखी हों, कुत्सिक परम्पराएँ, रूढ़ियाँ, कुरीतियाँ, शोषण, अन्याय–अत्याचार और आडंबर न हों।
तेजपाल सिंह 'तेज' का दृष्टिकोण मानवतावादी है। उन्होंने किसी भी रूप में पीड़ा भोगने वाले व्यक्ति के प्रति सहानुभूति का भाव ही नहीं दर्शाया, अपितु संवेदना को महत्ता प्रदान की है। साहित्यकार के लिए संवेदनशील होना पहला और आवश्यक गुण है। तेजपाल सिंह 'तेज' संवेदनशील होने के साथ–साथ एक जागरूक और जुझारू नागरिक भी हैं। यह बात उनकी ग़ज़लों, गीतों, कविताओं और गद्य साहित्य से स्पष्ट होती है।

कूटशब्द : चमचम धूप, खूनी बाघिन, अँधेरा शहर, खोटे ग्रह, पथिक, वीरान, नग़में, तूफान, बर्फ सरीखा, भोर का सूरज, रतजगा, थकन, जाति–पाँति, अभिशाप, अकर्मण्यता, सियाह रात, जुबां देना, कशमकश, क्रांतिमय–दृष्टिकोण, यारब, द्रोण, शोषित।

प्रस्तावना
तेजपाल सिंह 'तेज' का जन्म 8 अगस्त, सन् 1949 को उत्तर प्रदेश के बुलन्दशहर जिले के एक छोटे से गाँव अलाबास बातरी में दलित समाज के सामान्य परिवार में हुआ। इनका गाँव 'अलाबास बातरी' केशोपुर सठला व भवन बहादुर नगर के मध्य बसा हुआ है। लगभग बारह वर्ष की अल्पायु में ही इनके माता और पिता दोनों का देहान्त हो गया था। बचपन अभावों में बीता। बारहवीं कक्षा पास करने के उपरान्त दिल्ली आगमन पर सन् 1974 में भारतीय स्टेट बैंक में लिपिक के पद हेतु चयन हो गया। तदंतर आपने भारतीय स्टेट बैंक में ही नौकरी करते हुए 1977 में मेरठ विश्वविद्यालय, मेरठ से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। अगस्त 2009 में आप उप–प्रबंधक के पद से सेवानिवृत्त हुए। साहित्य–जगत में आप मूलतः एक ख्यात ग़ज़लकार और समीक्षक के रूप में जाने–पहचाने जाते हैं। आपने ग़ज़ल के साथ–साथ कविता, बाल–गीत, शब्द–चित्र, व्यंग्य, कहानी और आलेख आदि विभिन्न साहित्यिक विधाओं को अपनी लेखनी चलाकर समृद्ध किया है। आपकी प्रकाशित कृतियों का विवरण इस प्रकार है– 'दृष्टिकोण', 'गुजरा हूँ जिधर से', 'ट्रैफिक जाम है', 'हादसों के दौर में' व 'तूफाँ की जद में' (पाँचों ग़ज़ल संग्रह), 'पुश्तैनी पीड़ा' व 'वेताल दृष्टि' (कविता संग्रह), 'कहाँ गई वो दिल्ली वाली' (शब्द चित्र), 'बिन्दु–बिन्दु सार', 'शिक्षा, मीडिया और राजनीति' व 'आलोचना समालोचना के चलते' (तीनों वैचारिकी), 'टूट गया भ्रम संबंधों का' (गीत), 'चल मेरे घोड़े', 'रुनझुन', 'खेल–खेल में', 'धमाचौकड़ी', 'खेल–खेल में अक्षर ज्ञान' (पाँचों बाल–गीत), इनके अतिरिक्त 'सृजन के पथ पर' व 'धूप औसारे चढ़ी' आपकी संपादित कृतियाँ हैं। आपकी एक संकल्पित कहानी पर 'कान्या की वापसी' नामक पाँच कड़ियों का टी. वी. धारावाहिक का प्रसारण भी हो चुका है तथा आपकी ग़ज़ल 'तन्हा ज़िन्दगी' शीर्षांकित की ऑडियो कैसेट भी प्रकाश में आ चुकी है। आपकी गद्य–पद्य की रचनाएँ यहाँ–वहाँ स्थानीय व राष्ट्रीय स्तर के पत्र–पत्रिकाओं में छपती रहती हैं।
आपके साहित्यिक योगदान को देखते हुए आपको 'हिन्दी साहित्य अकादमी, दिल्ली' (दिल्ली सरकार) के द्वारा 'खेल–खेल में' (बाल–गीत) को वर्ष 1995–96 के लिए 'बाल साहित्य पुरस्कार' तथा समग्र साहित्यिक सेवाओं के लिए वर्ष 2006–07 के लिए 'साहित्यकार सम्मान' प्रदान किया जा चुका है। लुटि–पिटी ज़िन्दगी, भूखा–प्यासा बचपन, लंगड़ी–लूली संस्कृति, गूंगा–बहरा प्रशासन व चलता–फिरता सामाजिक/राजनीतिक आचरण जैसे विषय ही आपकी रचना को जन्म देते हैं। पीड़ा और द्वंद्व में पगी आपकी रचनाएँ अक्सर कड़वी होती हैं,

इस कारण वरिष्ठ साहित्यकार और राजनेता शाहिद सिद्दीकी ने आपको 'बागी तेवर का कवि' की संज्ञा दे डाली।

कहना अतिशयोक्ति नहीं कि व्यथा–वेदना की अतिशयता के कारण मानव–जीवन संवेदना–शून्य हो जाता है। घोर निराशा एवं वेदना के कारण मानव–समाज में संकल्पनिष्ठा व कर्त्तव्यनिष्ठा की कमी आ रही है। इसीलिए कवि अपील करता है कि अगर समाज संवेदनहीन हो गया, तो दीन–दुखियों की मदद कौन करेगा? जिस तरह से सत्ता की मारा–मारी में आम आदमी परेशान हो रहा है, उसे बेलगाम सत्ता और सियासतदानों से उसे कौन बचाएगा? कवि का मत है कि अगर मानवता–विरोधी ताकतों से संघर्ष करना है, तो खुलकर करना होगा, अन्यथा आज के दौर में मजलूमों की आवाज सुनने वाला कोई भी नहीं है। यद्यपि कवि तेजपाल सिंह 'तेज' का मानना है कि कवि अथवा लेखक कोई क्रांति नहीं करते, क्रांति तो केवल और केवल पाठक वर्ग करता है, तथापि मेरा ये मानना है कि कवि अथवा लेखक अपने विचार पाठकों के सामने न परोसें तो शायद क्रांति–बोध का उदय ही नहीं हो पाएगाः

"जनता की सुध लेगा कौन?
उसके जख़्म भरेगा कौन?
रोज़ी–रोटी के मुद्दों की,
सूनी माँग भरेगा कौन?
मानवता के अंधे घर में,
चमचम धूप धरेगा कौन?
सत्ता की खूनी बाघिन पर,
आखिर वार करेगा कौन?
संघर्षों की 'तेज' कहानी,
बिस्तर बीच सुनेगा कौन?"[1]

कुछ लोगों को सीधी और सरल भाषा में कही गई बात समझ में नहीं आती। इस बात को लेकर कवि बहुत दुखी है। कवि को लगता है कि आज के दौर में आदमी को ज्यादा सीधा भी नहीं होना चाहिए। अधिकतर लोग सीधे–सादे/ईमानदार व्यक्ति की बात को तव्वजो नहीं देते। घर हो या बाहर, सभी जगह सरल आदमी को विशेष महत्त्व नहीं दिया जाता। वैसे रीतिकालीन कवि बिहारी ने भी इस बात को बहुत अच्छी तरह समझते हुए लिखा है, ''भले भले कहि छोड़ियो, खोटे ग्रह जपु दान।'' ग़ज़लकार तेजपाल सिंह 'तेज' भी ज़माने की फ़ितरत को समझते हुए लिखते हैंः

''जूतों के यार कहाँ बातों से मानते हैं,
बगावत छोड़के मैंने अच्छा नहीं किया।
अब तो अपने भी बचके निकल जाते हैं,
शराफत छोड़के मैंने अच्छा नहीं किया।''[2]

आज संसार के बहुसंख्यक लोग व्यथित–पीड़ित हैं। इस वेदना से सम्पूर्ण मानवता रो रही है। लोग प्रायः संकल्पशील एवं संघर्षशील नहीं हैं, वे निराशा एवं वेदना से ग्रस्त हैं। इस निराशा का कारण है कि पीड़ित व्यक्ति को अपने चारों ओर अँधकार नजर आता है। कवि का कर्म, समाज में आशा और विश्वास का संचार करना। वही कार्य तेजपाल सिंह 'तेज' करते हुए दिखाई देते हैं। ग़ज़लकार 'तेज' अपनी ग़ज़ल 'अँधेरा शहर है संभलकर निकलो' में लिखते हैंः

''अँधेरा शहर है संभलकर निकलो,
रोशनी के वास्ते सजकर निकलो।
हारकर बैठने से कुछ नहीं हासिल,
गर्ज ये है कि कुछ तनकर निकलो।
जालिम की बातों में कभी मत आना,
उनकी छाती पे सदा चढ़कर निकलो।'[3]

मनुष्य को जीवनपर्यन्त अनेकानेक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। जो लोग जीवन–पथ की बाधाओं से घबराकर रास्ता बदल लेते है या थक–हारकर बैठ जाते हैं, वे असफल ही होते हैं दूसरी ओर जो लोग पूर्ण आशा और विश्वास के साथ मेहनत करते हैं, वे जीवन की विपरीत से विपरीत परिस्थितियों और परेशानियों को भी मात दे देते हैं। कर्मठ लोगों की हमेशा जीत होती है। कवि आशा, विश्वास और कर्मठता का महत्त्व समझाना चाहता है। कवि का मत है कि जीवन–पथ पर अनेक बाधाएँ आती हैं.....आएंगी भी। इसलिए उन बाधाओं का निराकरण करने के लिए आत्मविश्वास और संकल्पनिष्ठा रखनी चाहिए। कवि 'तेज' 'ऐ पथिक! वीरान तेरा क्या करेगा?' गीत में मानव को विपरीत परिस्थितियों में भी साहसी और संकल्पनिष्ठ बने रहने के संदेश देते हैंः–

''ऐ पथिक! वीरान तेरा क्या करेगा?
विश्वास की गर्मी है तेरी श्वास में,
उद्दाम वेगों से भरा तूफान तेरा क्या करेगा?
देख मत तू रास्ते की मुश्किलें,
आशीष हैं वरदान हैं ये मुश्किलें,
प्यार के नगमें सुनाता तू चला चल,
दुख–दर्द का संगीत हैं ये मुश्किलें।
ऐ पथिक! वीरान तेरा क्या करेगा?
विश्वास की गर्मी है तेरी श्वास में,
उद्दाम वेगों से भरा तूफान तेरा क्या करेगा?''[4]

रास्ते की मुश्किलों को देखकर लौट जाने वाले पथिकों को मंजिल नहीं मिलती। अपने मुकाम तक वही पहुँच पाते हैं, जो मुश्किलों को दरकिनार कर लगातार चलते रहते हैं। जो आत्मविश्वासी होते हैं, वे एक न एक दिन अवश्य ही सफल होते हैं और जो खाली बैठे–बैठे हाथ मलते हैं, वे असफल होते हैं। कवि जनसामान्य को प्रेरित करते हुए कहता है, माना कि जीवन में अनेक परेशानियां हैं, परन्तु थोड़ा हौसला रखिए, कामयाबी अवश्य ही मिलेगीः–

''यूँ ना बैठे हाथ मलो,
काँटों पर चलने का दम है,
तो तुम मेरे साथ चलो।
सूरज तो सूरज है यारा,
आज नहीं तो कल निकलेगा।
जीवन माना बर्फ सरीखा,
आज नहीं तो कल पिघलेगा।
काँटों पर चलने का दम है,
तो तुम मेरे साथ चलो।
यूँ ना बैठे हाथ मलो।।''[5]

उचित अवसर पर मेहनत करने से सफलता मिलती है, अन्यथा वक्त गुजर जाने के बाद पछतावे के अलावा कुछ भी हाथ नहीं लगता। कवि ऐसे लोगों से परेशान है, जो हमेशा नींद के आगोश में रहते हैं, अपने भविष्य को लेकर सचेत नहीं हैं। कवि ऐसे लोगों को चेतावनी देते हुए लिखता हैः–

''कब खुलेगी नींद तेरी।
भौर का सूरज उगा है,
चाँद भी कुछ–कुछ जगा है,
हर गली में रतजगा है,
कब खुलेगी नींद तेरी।''[6]

गरीब व्यक्ति मेहनत–मजदूरी करके अपना और अपने परिवर का पेट पालता है। दिन–रात मेहनत करने पर भी उसे बार उचित पारिश्रमिक नहीं मिल पाता। कई बार ऐसा भी होता है कि कई दिनों तक मजदूरी ही नहीं मिलती। मजदूर को दिन–रात अपने मालिक की सेवा करनी पड़ती है क्योंकि उसकी चाकरी से ही उसका घर चलता है। वह अपने मालिक की सेवा के लिए अपने परिवार की भी उपेक्षा करने को मजबूर होता है। वह अपनी हताशा और निराशा के चलते घर के सभी उत्तरदायित्वों को पूरा नहीं कर पाता है। ऐसी स्थिति में वह अपना आक्रोश अपनी पत्नी और बच्चों पर जाहिर करता है। कवि 'तेज' ने 'मुट्ठी भर चावल' नामक कविता में ऐसे व्यक्ति का चित्रण किया हैः–

''अरे! रघुवर
तू सचमुच रग्घू है
पत्नी को मारता है
माँ को डांटता है
बहनों को झिड़कता है
बच्चों को ताड़ता है
पूजता है उस मालकिन को
जो तुझे
सारे दिन की थकन के बदले
देती है
मुट्ठी भर चावल/बासी रोटियां।''[7]

कवि के अनुसार पीड़ित को अत्याचारों का विरोध करना चाहिए। अत्याचार सहन करना अत्याचार को बढ़ावा देना है। अत्याचार की शिकार जनता को अत्याचारों से छुटकारा दिलाना अच्छा काम तो है ही। शासकों का तो यह पहला कर्तव्य है कि वे जनता की परेशानियों को दूर करें, किंतु यथास्थिति इसके विपरीत है। वर्तमान दौर में लोकतंत्र लोक से दूर होता जा रहा है। कारण चाहे जो भी हो, अराजकता का माहौल बना हुआ है। कवि 'तेज' शोषित वर्ग को अपनी शक्ति पहचान कर शोषण का विरोध करने का आह्वान करता हैः–

''अरे रग्घू! सच को पहचान
फेंक दे ये बासी रोटियां
मुट्ठी भर चावल
मेहनत–मजूरी की कीमत वसूल
खुद को पहचान
कि तू रग्घू नहीं
रघुवर है।''[8]

शोषित व्यक्ति रात–दिन शोषण की चक्की में पिसता रहता है। बहुत से शोषित तो इस शोषण को विधाता का लेख मानकर भोगते रहते हैं। उनके विचार से परमात्मा ने कुछ लोगों की पिछले जन्म के कर्मों की वजह से ऐसा जीवन दिया है। लोग अपने शोषण, उत्पीड़न और पीड़ा को विधाता का लेख मानकर इस अन्याय को चुपचाप सहन करते चले जाते हैं। इस शोषण और उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए सोचते तक भी नहीं हैं। किंतु विचारणीय प्रश्न यह है कि क्या वास्तव में ऐसा ही है? क्या गरीब का यह शोषण उस तथाकथित विधाता के लेख का परिणाम है? क्या उसके पूर्व जन्मों की सजा के तौर पर उसे इस जुल्म–सितम को भोगना पड़ रहा है? अगर ऐसा नहीं है, तो वे कौन सी मान्यताएं और परम्पराएं जिनके कारण युगों से उसका शोषण किया जा रहा है। कवि का काम केवल जो जैसा है, उसी का हूबहू चित्रण करना नहीं होता, वरन् इसका भी सन्देश देना है कि क्या होना चाहिए। लोगों को सही और सच्ची बात से रूबरू करवाने का काम कवि/लेखक का होता है। कवि तेजपाल सिंह 'तेज' भी अपने काव्य–रचना द्वारा जनजागरण कार्य बहुत ही कुशलतापूर्वक करते हैं। कवि 'पुश्तैनी पीड़ा' शीर्षक कविता में कहते हैं कि सभी के पुश्तैनी हकों का सुखद होना जरूरी नहीं है, परन्तु इसका अर्थ यह नहीं है कि जिन्हें विरासत में सुख नहीं मिला, वे केवल दुख भोगने के लिए ही पैदा हुए हैं। कवि ऐसे शोषित लोगों में चेतना का संचार करते हुए, उन्हें अन्याय के खिलाफ खड़े होकर पुश्तैनी पीड़ा की कारा को तोड़ने की सलाह देते हुए कहता हैः

''हम हैं कि
सदा से ही
पुश्तैनी पीड़ा को
जीते चले आ रहे हैं
झेलते आ रहे हैं
सामाजिक उपेक्षा
क्यों?
उठो! सूरज को
निगल जाओ
आदमी को आदमी से जोड़ो
पुश्तैनी पीड़ा की कारा को
एतियातन तोड़ो।''[9]

कवि तेजपाल सिंह 'तेज' की ग़ज़लों, कविताओं का अनुशीलन करने से संदेश मिलता है कि सभी मनुष्यों के अधिकार समान हैं। जातिपाँति के आधार पर किसी प्रकार का भेदभाव नहीं होना चाहिए। अधिकारों को प्राप्त करने के लिए पीड़ित व्यक्ति को खुद को ही संघर्ष करना पड़ता है। गुलामी मानव–समाज के लिए अभिशाप है। हर व्यक्ति स्वतंत्र जन्मा है। स्वतंत्र रहना हर व्यक्ति का अधिकार है। स्वतंत्रता हर कीमत पर सस्ती है। हरेक व्यक्ति को स्वतंत्रता का महत्त्व समझना चाहिए। जिन कारणों से, जिन कमियों से इतना बड़ा देश मुटठीभर विदेशी लोगों का गुलाम बन गया, उन कमियों से भविष्य में बचा जाये। समाज के दलित–दमित, गरीब और निरीह वर्ग को भी साथ लेकर चलना समाज के सभी वर्गों का काम होना चाहिए। गुलाम रहकर न तो कोई व्यक्ति और न ही कोई देश प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता है। कारण कि इस अवस्था में उन्नति के तमाम मार्ग अवरुद्ध हो जाते हैं। आजादी अनमोल है, उसका महत्त्व समझना चाहिए । दमित और शोषित को अपनी लड़ाई स्वयं लड़नी होगी और वह यह लड़ाई तब लड़ेगा, जब वह अपनी ताकत को पहचानेगाः–

''तुम कल भी अपने लिए नहीं लड़ते थे
आज भी तो
अपने लिए नहीं लड़ते
केवल कमजोर
मालिकों के लिए लड़ते हो
उठो! अपना वजन पहचानो
चेतो!
अब अपने लिए लड़ो
नया इतिहास गढ़ो।''[10]

कवि जहाँ समर्थ–समाज से सवाल करता है, वहीं दलित–समाज में व्याप्त नीरसता और अकर्मण्यता पर भी प्रहार करता है। "जूते पहनना सीख लो" कविता में कवि मेहनतकश आदमी को बदलते युग के अनुसार अपने–आप में परिवर्तन करने तथा अपनी मेहनत के फल का स्वाद स्वयं चखने की सीख देता है। यथा, "जूते पहनना सीख लो" शीर्षक कविता की निम्नांकित पंक्तियाँः–

"मैं जानता हूँ

तुम्हें जूते बनाने आते हैं
किंतु पहनने नहीं आते
तुम आज भी नंगे पाँव हो
पता नहीं
धूप हो कि छाँव हो
अरे! अब तो जूते भी
मशीनों से बनने लगे हैं
नए–नए रूपों में
ढ़लने लगे हैं
थोड़ा तुम भी बदलो
जूते पहनना सीख लो।"[11]

जब कुछ लोग मेहनत करें और बाकी लोग आराम से बैठे–बैठे खाएं तब मेहनतकश इंसान के मनोमस्तिष्क में यह सवाल जरूर उठता है कि क्या वे ही उपवास की तपिस झेलने को पैदा हुए हैं। ऐसे माहौल में तेजपाल सिंह 'तेज' को भूख–प्यास से व्याकुल व्यक्ति इतिहास की जड़ें खोदने को तत्पर दिखाई देता है। आपकी कविता केवल भावनात्मक ही नहीं है, अपितु विपरीत परिस्थितियों से दो–दो हाथ करने का दम भरती हुई दिखाई देती है। संघर्ष करना आसान नहीं होता। इसके लिए बहुत साहस की आवश्यकता होती है और यह संघर्ष तब और भी मुश्किल हो जाता है, जब यह संघर्ष अपनों के साथ हो। कवि ऐसे में नसीहत देते हुए कहता हैः

''संघर्षों की कठिन डगर पर
पाँव से पाँव मिला रखना,
संबंधों की सियाह रात में,
फिर–फिर दीप जला रखना।''[12]

साहसी और दृढ़–निश्चयी व्यक्ति जीवन–मार्ग में डूबता–उबरता हुआ प्रायः आगे बढ़ता रहता है। साहस अर्थात् यौवन कभी नहीं डूबता है, वह सदा जीवन–सागर को पार कर लेता है। परन्तु उन लोगों का क्या किया जाए जो विपरीत परिस्थितियों से हार मानकर निराश हो जाते हैं। कवि को ऐसे लोग राख के ढेर के समान प्रतीत होते हैं, जिनमें कोई भी चिंगारी शेष नहीं है। ऐसे व्यक्तियों को समझाना कवि को अपना पागलपन लगता हैः–

''कैसा पागल हूँ, मुर्दों को जुबा देता हूँ,
राख के ढेर को जलने की दुआ देता हूँ।''[13]

कुछ महसूस करना और उसे अल्फाज़ों में गूँथना इतना आसान नहीं होता तथा शायरी/काव्य के जरिए तो यह और भी मुश्किल है। मुझे लगता है कि तेजपाल सिंह 'तेज' युग की आवाज को जैसे पहचान गए हैं। उन्होंने मानव–मन की कशमकश को अपनी शायरी/कविता में पिरो दिया है। उनकी रचनाओं को पढ़कर ऐसा लगता है कि आम आदमी का दुख–दर्द ही, जैसे उनकी शायरी/कविता है। उनके काव्य से प्रत्यक्ष है कि उनका दृष्टिकोण किसी भी आम आदमी का दृष्टिकोण है। तेजपाल सिंह 'तेज' अपने गीत, ग़ज़ल, कविताओं में लोगों को शोषण के विरुद्ध संघर्ष करने की प्रेरणा देते हैंः–

"बोलती होगी कभी, पर आज संसद मौन है,
घूरता है रोटियों को, आदमी यह कौन है?
जन की तो किस्मत धरा है, तंत्र की है आसमान,
भ्रष्ट है सत्ता समूची कि राष्ट्रीयता अब गौण है।
लुटती रही हैं आज तक, लुटती रहेंगी द्रोपदी,
लंगड़ी–लूली आस्था के बीज बोता द्रोण है।
खोल दो मुठ्ठी उठालो तीर, तरकश हाथ में,
'तेज' ये हिंसा नहीं, एक क्रांतिमय दृष्टिकोण है।"[14]

तेजपाल सिंह 'तेज' के साहित्य में समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार, शोषण, निराशा की अभिव्यक्ति है, तो वंचित वर्ग पर किए जा रहे अन्याय–अत्याचार का वर्णन भी है। उन्होंने नारी के दुःख–दर्द का चित्रण भी किया है, तो बेरोगजारी–भ्रष्टाचार पर भी अपनी लेखनी चलाई है। कवि 'तेज' की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे समस्याओं का केवल वर्णन ही नहीं करते वरन् उन्हें दूर करने के लिए मनुष्य को जागृत भी करते हैं। साहित्य का मुख्य उद्देश्य भी जनजागरण ही है, जो तेजपाल सिंह 'तेज' के साहित्य का मुख्य स्वर है। महात्मा बुद्ध, कबीर, गुरुनानक जैसे अनेक संतों ने समाज में धार्मिक, आर्थिक, सामाजिक, सांस्कृतिक तथा जीवन के विविध क्षेत्रों में समानता, न्याय, बन्धुता स्थापित करने का संदेश दिया है।

संसार का प्रत्येक व्यक्ति किसी न किसी व्यथा–वेदना से ग्रस्त है। 'तेज' मानव को विपरीत परिस्थितियों में भी साहसी और संकल्पनिष्ठ बने रहने का संदेश देते हैं। कवि का मत है कि जीवन–पथ पर अनेक समस्याएँ और बाधाएँ आती हैं, परन्तु मानव एक विवेकशील प्राणी है, इसलिए उसे उन बाधाओं का निराकरण करने के लिए संकल्पनिष्ठ होना चाहिए। कवि तेजपाल सिंह 'तेज' के अनुसार साहसी और दृढ़–निश्चयी व्यक्ति जीवन–पथ में आने वाली समस्याओं को हराकर अपनी मंजिल को प्राप्त कर ही लेता है।

'तेज' की कविता संदेश देती है कि सभी मनुष्यों के अधिकार समान हैं। उनके रचना–कर्म में जाति–आधारित विशेषाधिकारों का विरोध मिलता है। उन्होंने अपनी अनेक रचनाओं में मानव को अपने मौलिक अधिकारों को प्राप्त करने का आह्वान किया है। उनके के गीतों, ग़ज़लों और कविताओं में मानव–जीवन कठोर सच्चाइयों को उजागर किया गया है। उन्होंने आधुनिक सभ्यता और समाज की न्यूनताओं को लेकर तीखे व्यंग्य भी प्रस्तुत किये हैं।

तेजपाल सिंह 'तेज' के काव्य में मानवता के प्रसार का संदेश निहित है। मानवता सर्वोपरि गुण है। दया, करुणा, सहनशीलता, समन्वय, सदाचार आदि ऐसे गुण हैं, जो मानव को महान बनाते हैं। 'तेज' के काव्य में सम्पूर्ण मानव–जाति को खुशहाल बनाने का संदेश निहित हैः–

''चलो करें कुछ ऐसा यारो, एक साथ सब कदम उठें,
मानव, मानव को पहचाने, प्रेम के प्याले छलक उठें।
हवा समूची दुनिया की, ऐ! यारब कुछ–कुछ यूँ बदले,
कि बस्ती–बस्ती खुशहाली हो, बाग–बगीचे महक उठें।''[15]

'तेज' समाज में व्याप्त शोषण, विषमता, अन्याय, अत्याचार का विरोध करते हैं तथा देशवासियों में राष्ट्रीयता की भावना जागृत करने का भरसक प्रयास करते हैं। उनके काव्य का मुख्य स्वर देशवासियों में शान्ति, राष्ट्रीयता, ओज तथा पौरुष का संचार करना हैः–

''आओ! ऐसा देश बनाएं
जहाँ भेदभाव का सूर्य अस्त हो,
जन–जन में उल्लास व्याप्त हो,
भ्रष्टाचार पनप नहीं पाए,
प्रेम–भाव का पथ प्रशस्त हो।
आओ! ऐसी ज्योति जलाएं।
आओ! ऐसा देश बनाएं।''[16]

तेजपाल सिंह 'तेज' शोषित वर्ग के दर्द और पीड़ा को लेकर बहुत संवेदनशील दिखाई देते हैं। शोषित और दमित के साथ उनके संघर्ष में खड़े रहना उनकी प्रवृत्ति में शामिल है। राजनैतिक या सामाजिक समस्याओं को उठाने के साथ–साथ अनेक सन्दर्भों को अपनी कविता का विषय बनाना, उन्हें अधिक

प्रिय है। उनकी कविताएँ और ग़ज़लें समाज में व्याप्त विसंगतियों को व्यक्त तो करती ही हैं, इसी के साथ उनकी कविताओं में विद्रोह और संघर्ष का स्वर मुखर हुआ है। शोषण, अन्याय, अत्याचार के खिलाफ आवाज उठाती उनकी कविताएं मौजूदा हालात की गहरी पहचान कराती हैं। दरअसल तेजपाल सिंह 'तेज' की कविता अहसास और विश्वास की कविता है।

कहना न होगा कि यहाँ प्रस्तुत उनकी **कविताएँ** व गीत हर उस आदमी की बात करते हैं जो चहुँ ओर समस्याओं से घिरा हुआ है। इसलिए यह संभव है कि स्थापित कवि/आलोचक/समीक्षक उनकी कविता को कविता या गीत को गीत न मानें, पर संघर्ष का आह्वान करती उनके **रचनाएँ** तमाम आलोचनाओं/उपेक्षाओं का भार उठा पाने में सक्षम **हैं**, ऐसा मेरा मानना है।

सन्दर्भ

1. तेजपाल सिंह 'तेज', 'ट्रेफिक जाम है', शेष साहित्य प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 73
2. तेजपाल सिंह 'तेज', 'हादसों के दौर में', संगीता प्रकाशन, विश्वास नगर, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 84
3. वही, पृ. सं. 61
4. तेजपाल सिंह 'तेज', 'टूट गया भ्रम संबंधों का', समता प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 13
5. वही, पृ. सं. 94
6. वही, पृ. सं. 50
7. तेजपाल सिंह 'तेज', 'पुश्तैनी पीड़ा', शेष साहित्य प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 23
8. वही, पृ. सं. 24
9. वही, पृ. सं. 17
10. वही, पृ. सं. 43
11. वही, पृ. सं. 29
12. तेजपाल सिंह 'तेज', 'ट्रेफिक जाम है', शेष साहित्य प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 100
13. तेजपाल सिंह 'तेज', 'दृष्टिकोण', राहुल प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 21
14. वही, पृ. सं. 80
15. तेजपाल सिंह 'तेज', 'टूट गया भ्रम संबंधों का', समता प्रकाशन, शाहदरा, नई दिल्ली, प्र. सं. 2012, पृ. सं. 37
16. वही, पृ. सं. 72